ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

नारीवादः एक समीक्षात्मक अध्ययन
Feminism: A Critical Study

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 20/12/2021, Date of Publication: 21/12/2021

अवधेश कुमार झा
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
हे० न० ब० राज०
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नैनी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश,
भारत

सारांश

नारीवाद का उदय 1960 के दशक से माना जाता है। आज नारीवाद की कई धाराएं हैं फिर भी मोटे तौर पर इसकी प्रमुख मान्यता यह है की समाज में लिंग के आधार पर लगभग सभी क्षेत्रों में विभेद किया जाता है। इस अध्ययन का प्रमुख कारण नारीवाद से जुड़े कुछ प्रमुख धारणाओं या भ्रांतियों की समीक्षा करना है। नारीवाद व्यापक प्रभाव वाला एक ऐसा मुद्दा है जिससे दृष्टिकोण के स्तर पर अलग रहना असंभव है। यह अपेक्षा की जाती है कि सम्बंधित जन यह महसूस करेंगे की महिला आंदोलन से उनकी जिंदगी में क्या परिवर्तन हुआ है।

The rise of feminism is believed to date from the 1960s. Today there are many streams of feminism, yet broadly its main belief is that discrimination is done in almost all areas on the basis of gender in the society. The main reason for this study is to review some of the major misconceptions or misconceptions associated with feminism.Feminism is such an issue of wide-ranging impact that it is impossible to separate from the point of view. It is expected that the concerned people will feel that the women's movement has changed their lives.

मुख्यशब्दः पूंजीवादी व्यवस्था, सेक्सुअल पॉलिटिक्स, प्योर लस्ट, उत्पीड़ित वर्ग, भगिनी समाज, धर्म, वर्ग, जाति, प्रजाति, रेडिकल फेमिनिज्म, पुरुष प्रभुत्व, नारीवाद, नारीवादी आन्दोलन, सामाजिक स्तरीकरण, संवेदनशीलता, विभाजन, नारीवादी मूल्य।

Keywords: Capitalist system, sexual politics, pure lust, oppressed class, sister society, religion, class, caste, race, radical feminism, male dominance, feminism, feminist movement, social stratification, sensitivity, division, feminist values.

प्रस्तावना

समकालीन संदर्भ में एक आंदोलन के रूप में नारीवाद का उदय 1960 के दशक के शुरूआत से माना जाता है। 1960 के दशक के अन्त से विशेष कर "न्यूयार्क रेड स्टॉकिंग्स घोषणा पत्र" (1969) के बाद से नारीवाद पर जोरदार बहस शुरू हुई। हालांकि इस आंदोलन के आरंभिक संकेत अठारवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोपीय चिंतन में ढूंढे जा सकते हैं। 1793 में मेरी वाल्स्टन क्राफ्ट ने अपनी पुस्तक विंडीकेशन आफ द राइट्स आफ वूमेन में महिलाओं को कानूनी, राजनीतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में समानता प्रदान करने के लिए जोरदार वकालत की थी। 1869 में जान स्टुआर्ट मिल ने अपनी पुस्तक सब्जूगेशन आफ वीमेन में लिखा कि स्त्री-पुरूष संबंध मैत्री पर आधारित होना चाहिए, प्रभुत्व पर नहीं। उन्नीसवीं शताब्दी में माक्र्सवाद ने पूंजीवादी व्यवस्था को स्त्री-पुरूष असमानता के लिए जिम्मेदार माना है और स्त्री-पुरूष समानता के लिए इस व्यवस्था के खात्मे की वकालत करता है। सीमोन द बोउवार की द सेकिंड सेक्स (1949), बेट्टी फ्रीडान की दी फेमिनिन मिस्टिक (1963), केट मिलेट की सेक्स्युअल पोलिटिक्स (1969), शूलास्मिथ फायरस्टोन की दी डायलैक्टिक्स आफ सेक्स (1970), जुलियट मिशेल की वीमेन्स एस्टेट (1971), शीला रोबाथम की वूमेन, रेस्टिटेन्स एण्ड रिवोलुशन (1972), मेरी डाली की प्योर लस्ट (1984) आदि अमर कृतियाँ हैं जिन्होंने नारीवाद को दशा और दिशा प्रदान करने में सहयोग किया है।आज नारीवाद की हालांकि कई धाराएं है फिर भी मोटे तौर पर इसकी मूल मान्यता यह है कि समाज में जेंडर के आधार पर लगभग सभी क्षेत्रों में विभेद किया जाता है। यह सिद्धान्त स्त्रियों को एक उत्पीड़ित वर्ग (ऑप्रेसड क्लास) और पुरूषों को अपने उत्पीड़न का प्रमुख स्त्रोत मानता है। इस मान्यता के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि नारीवादी, स्त्रियों को एक ऐसा समूह मानते हैं जिनके हित पुरूषों के हितों के विरूद्ध है। ये हित समस्त स्त्रियों को एक भगिनी-समाज (सिस्टरहुड) के रूप में संगठित होने की पे्ररणा देता है जो देश, धर्म, वर्ग, जाति, प्रजाति आदि की सीमाओं से परे है। नारीवाद नारी की पराधीनता (सब्जूगेशन) और नारी के प्रति होने वाले अन्याय पर ध्यान केन्द्रित करता है और उनके प्रतिकार के उपाय पर विचार करता है। नारीवादी आन्दोलन के केन्द्र में जो मुद्दे प्रमुखता से छाये रहे हैं वे स्त्रियों के अधिकारों को मानव अधिकारों की सामान्य श्रेणी के रूप में मान्यता दी जाए, जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्री-पुरूष की समानता स्वीकार की जाए और स्त्री को परम्परागत पराधीनता से मुक्ति प्रदान करने के लिये स्त्रीत्व (वूमेनहुड) की नई परिभाषा गढ़ी जाए।

इस अध्ययन का उद्देश्य नारीवाद से जुड़े कुछ प्रमुख धारणाओं/भ्रांतियों की समीक्षा करना है जैसे क्या स्त्रियों के हित और पुरूषों के हित परस्पर विरोधी हैं? दूसरा, यह कि क्या नारीवाद परिवार की संस्था के प्रतिकूल है? और तीसरा, नारीवाद अपने उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए जिस व्यूह-रचना को अपनाया है, क्या उसमें देश, काल और परिस्थिति के साथ-साथ बदलाव की जरूरत है?

प्रस्तुत अध्ययन नारीवाद पर उपलब्ध साहित्यिक स्त्रोंतो पर आधारित है जिसमें नारीवाद की अवधारणा, इतिहास, सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य और सम्मेलनों और विचार-गोष्ठियों में उठाये जा रहे प्रश्नों पर विचार किया जाता है।

पुरूष बनाम स्त्री/पुरूष और स्त्री

पहला प्रश्न यह है कि क्या स्त्रियों के हित और पुरूषों के हित परस्पर विरोधी है? आमूल परिवर्तनवादी (रेडिकल फेमिनिज्म) पितृसत्ता, पुरूष प्रभुत्व और नारी शरीर पर पुरूष के नियन्त्रण को नारी उत्पीड़न का मुख्य जिम्मेदार मानता है और कहता है कि सारा इतिहास नारी पर पुरूष के अत्याचार का इतिहास है। इसीलिए वह उस व्यवस्था के समूल अन्त पर जोर देता है। जिसमें कोई भी सत्ता पुरूषों के केन्द्रित न हो। कई रेडिकल नारीवादियों ने स्त्रियों की ऐसी स्वायत्त बस्तियाँ बसाने की हिमायत की है जिसमें उसके उत्पीड़न के मूल स्त्रोत-पुरूष के लिए को जगह नहीं होगी। मानव-जाति को समाप्त होने से बचाने के लिए यहाँ केवल पुरूष के पुरूषत्व का इस्तेमाल किया जायेगा, उसे प्रधान भूमिका निभाने कोई अवसर नहीं दिया जायेगा। लिबरल नारीवादी "अवसर की समानता" की बात करते हैं। कोई भी समाज जो मूलतः आर्थिक और सामाजिक रूप से असमान हो वहाँ पर अवसर की समानता अर्थहीन सा लगता है। समानता के लिए प्रयास किया जा सकता है। समानता न छीन के लायी जा सकती है और न ही प्रतिक्रियावाद के जरिये। पुरूष को अलग-थलग करके भी नारीवाद अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता। इसलिए नारीवाद को इस दिशा में सोचने जरूरत है कि यह (नारीवाद) महज स्त्री-मुक्ति का आंदोलन नहीं है। बल्कि यह वृहदतर सामाजिक आंदोलन है जो प्रत्येक व्यक्ति की समानता की बात करता है। नारीवाद पुरूषों के विरूद्ध नहीं है। यदि यह विरोधी है तो उस दमनकारी और पुरातन सामाजिक संरचना का जो पुरूष और स्त्रियों को असमान प्ररिस्थितियाँ प्रदान करता है। इसलिए नारीवादी आंदोलन में प्रत्येक व्यक्ति की, चाहे वह स्त्री हो या पुरूष, एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

परिवार और नारीवाद

दूसरा प्रश्न है कि क्या नारीवाद परिवार की संस्था के प्रतिकूल है? परिवार की संस्था ने पुरूष, स्त्री और बच्चों को एक परस्पर आबद्ध इकाई बनाया है और इस संस्था ने लिंग संबंधी अंदरूनी स्तरों को विस्तृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं को एक निम्न दर्जा प्रदान किया गया है और इसी कारण एक लिंग-विशेष के रूप में उनकी दशा शोचनीय है। केट मिलेट ने परिवार को पितृसत्ता का प्रमुख संस्था माना है और परिवार के दोनों केन्द्रीय कार्य-समाजीकरण और प्रजनन, इस संस्था से प्रतिस्थापित करने की बात करती हैं। वह मानती हैं कि सभी परिवार पितृसतात्मक हैं और यहाँ समाजीकरण अलग-अलग जेंडर रोल्स की बात और प्रजनन एक सामाजिक पिता की अनिवार्यता की बात करता हैं। लेकिन कई अध्ययन और मीडिया रिपोर्ड यह दर्शाते हैं कि इसके कई गंम्भीर दुष्परिणाम सामने हैं। इसलिए नारीवाद को परिवार का विरोध त्यागना होगा। नारीवाद का आग्रह सिर्फ यह होना चाहिए कि एक महिला को दबाव डालकर उस भूमिका को स्वीकार करने के लिए न मजबूर किया जाए जिसे उसने स्वयं नहीं चुना हैं चाहे वह भूमिका कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो। प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपने कार्य सम्पादन को घर और कार्य-स्थल से इस तरह जोड़ सकें जिसमें उसे व्यक्तिगत संतुष्टि मिल सके न कि यह समाज द्वारा निर्धारित हो।

व्यूह-रचना

तीसरा प्रश्न है कि नारीवाद अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जिस व्यूह-रचना को अपनाया है क्या उसमें देश, काल और परिस्थिति के साथ-साथ बदलाव की जरूरत हैं? नारीवादी चिंतको, लेखकों, लेखकों और आंदोलनकारियों का यह दायित्व है कि वर्तमान ओर आगामी सामाजिक परिस्थियों और चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य मे अपने बिन्दुओं, भूमिकाओं और कार्यक्रम की रूपरेखा को वृहद्तर सामाजिक संवेदनशीलता से जोड़े और परिवार तथा समाज को स्त्री और पुरूष के द्विखंडी विभाजन के नकारत्मक प्रभाव से सुरक्षित करें।

अध्ययन का उद्देश्य

1. क्या स्त्रियों के हित और पुरुषों के हित परस्पर विरोधी हैं?
2. क्या नारीवाद परिवार संस्था के प्रतिकूल है?
3. नारीवाद अपने उद्देश्यों की पूर्ती के लिए किस व्यूह-रचना को अपनाया है?
4. क्या नारीवाद समाज में व्यापक प्रभाव वाला एक मुद्दा है?
5. महिला आंदोलन एवं नारीवाद में परस्पर सम्बन्ध।

निष्कर्ष

नारीवाद व्यापक प्रभाव वाला एक ऐसा मुद्दा है जिससे दृष्टिकोण के स्तर पर अलग रहना असंभव है। नारीवाद के प्रति अधिकांश विरोध नारीवादी मूल्यों को न समझने और परिवर्तन के डर से मुखर हुआ है। यह अपेक्षा की जाती है कि संबंधित जन यह महसूस करेंगे कि महिला आंदोलन ने उनकी जिन्दगी में क्या परिवर्तन किया है और इस रूप में नारीवाद पर अपने पूर्व दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *न्यूयॉर्क रेड स्टॉकिंग्स घोषणा पत्र, 1969*
2. *गाबा, ओ. पी. - शक्ति, सत्ता और वैद्यता, 1998*
3. *फेमिनिज्म : सम जेनरल पॉइंट्स ऑफ़ क्रिटिसिज्म*
4. *सिंधी, नरेन्द्र कुमार - नारीवादः परिपेक्ष व सिद्धांत, समाजशास्त्रीय सिद्धांत : विवेचना एवं व्याख्या, 1998*
5. *भागवत, विधुत - फेमिनिस्ट सोशल थॉट : एन इंट्रोडक्शन टू सिक्स की थिंकर्स, 2004*
6. *रे, राका - फ़ील्ड्स ऑफ़ प्रोटेस्ट : वोमेंस मूवमेंट्स इन इंडिया, 2014*